Volume-IX, 2016 ISSN : 0974-6730

दार्शनिक विमर्श
Dārśanika Vimarśa

Research Journal of
Applied Indian Philosophy and Comparative Philosophy

Patron:
Prof. S. R. Bhatt

Chief Editor:
Prof. D.B. Chaube

Editors:
Dr. Jai Shankar Singh
Dr. Manoj Kumar Tiwari

कारणात्मक सम्बन्ध : मिल की प्रायोगिक विधियाँ

डॉ. सत्यनारायण देवलिया*

प्रकृति में कुछ भी अकारण घटित नहीं होता। प्रत्येक घटना या परिस्थिति के लिए किसी न किसी आवश्यक एवं पर्याप्त अवस्था की आवश्यकता होती है। विशेषतः विज्ञान के क्षेत्र में प्रकृति में घटने वाली विभिन्न घटनाओं में कार्य कारण सम्बन्धों की खोज की जाती है और उनके आधार पर वैज्ञानिक किसी सामान्य सिद्धांत पर पहुँचते है। विशेष तथ्यों के आधार पर किसी सामान्य सिद्धांत पर पहुँचना आगमन कहलाता है। इसके विपरीत किसी सर्वमान्य सामान्य सिद्धांत के आधार पर विशेष तथ्य पर पहुँचना निगमन है। विज्ञान के क्षेत्र कार्य कारण सिद्धांत का पता लगाने के लिए आगमनात्मक विधियों की आवश्यकता पड़ती है, जिनकी चर्चा आगमन तर्कशास्त्र में की जाती है पर समाज विज्ञान व मानविकी के क्षेत्र में अनुसंधान हेतु भी ये विधियाँ सहायक सिद्ध हो सकती है। मिल से पहले बेकन तथा हर्शेल के दर्शन में इन विधियों के सूत्र पाये जाते हैं, पर मिल ने इन्हें व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया। इसलिए ये मिल की प्रायोगिक विधियाँ कहलाती है। इन्हीं प्रायोगिक छानबीन की विधियों या प्रत्यक्ष आगमन के सूत्र भी कहते है। इन प्रायोगिक विधियों में प्रयोग के साथ–साथ निरीक्षण का भी सहारा लिया जाता है। मिल के अनुसार प्रायोगिक विधियों का दूसरा नाम निरास की विधियाँ भी है। निरास की विधियों से तात्पर्य इन विधियों में अप्रासंगिक व आकस्मिक परिस्थितियों को हटा दिया जाता है।

प्रायोगिक विधियों के प्रकार

जे.एस. मिल ने निम्नलिखित पाँच प्रायोगिक विधियों को मान्यता प्रदान की है:

1. अन्वय विधि
2. व्यतिरेक विधि
3. अन्वय–व्यतिरेक की संयुक्त विधि
4. अवशेष विधि
5. सहपरिवर्तन विधि

उपरोक्त विधियों में प्रथम दो विधियाँ ही प्रमुख है शेष तीन गौण हैं, क्योंकि प्रथम दो अन्वय एवम् व्यतिरेक की विधियाँ मौलिक हैं।

---

* *दर्शनशास्त्र विभाग, डॉ0 हरीसिहं गौर वि. विसागर, म.प्र.,*
ई0 मेल: dr.sndevliya7@gmail.com, मो0 9893450106